Peer reviewed Journal Impact Factor:7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

Multidisciplinary International Level Referred Journal

December-2021 Volume-12 Issue-26

Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and Dr. B. R. Ambedkar – Thoughts and works

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Editor
Mr. Shashikant Jadhawar
I/C, Principal,
Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya,
Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India

Executive Editor
Dr. Anant Narwade
Dr. Raghunath Ghadge
Mr. Anil Jagtap

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Scanned with CamScanner

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

December-2021 Volume-12 Issue-26

On

Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and Dr. B. R. Ambedkar – Thoughts and works

Chief Editor	Editor
Dr. R. V. Bhole 'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102	Mr. Shashikant Jadhawar I/C, Principal, Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya, Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India

Executive Editor
Dr. Anant Narwade
Dr. Raghunath Ghadge
Mr. Anil Jagtap

EDITORIAL BOARD

Prof. R. J. Varma ,Bhavnagar [Guj] Dr. D. D. Sharma, Shimla [H.P.] Dr. Abhinandan Nagraj, Benglore[K] Dr. Venu Trivedi ,Indore[M.P.] Dr. Chitra Ramanan Navi ,Mumbai[M.S]	guyen Kim Anh, [Hanoi] Virtnam Prof. Andrew Cherepanow, Detroit, Michigan [USA] Prof. S. N. Bharambe, Jalgaon[M.S] Dr. C. V. Rajeshwari, Pottikona [AP] Dr. S. T. Bhukan, Khiroda[M.S]	Dr. R. K. Narkhede, Nanded [M.S] Prof. B. P. Mishra, Aizawal [Mizoram] Prin. L. N. Varma ,Raipur [C. G.] Prin. A. S. Kolhe Bhalod[M.S] Prof.Kaveri Dabholkar Bilaspur [C.G]

Published by- Mr. Shashikant Jadhawar, I/C, Principal, Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya, Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

Scanned with CamScanner

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	महात्मा ज्योतिबा फुले की शिक्षा नीति	
2	राजर्षि शाहू महाराज और आर्य समाज डॉ. विनोदकुमार विलासराव वाय 'वेदार्थ'	4-6
3	महात्मा फुले ,राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज ,डॉ आंबेडकर यांनी मांडलेली सामाजिक , डॉ. श्रीनिवास भोग	
4	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार डॉ. अरूण चांगदेव खर्डे, कु. साडेकर राधिका गणेश	10-11
5	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक विचारांची प्रासंगिकता सा.प्रा.बी.एच.मगर	12-15
6	आंबेडकर की विचारधारा Dr. Rajashekhar U Jadhav	16-18
7	महात्मा जोतीराव फुले यांची अभंग रचना डॉ. एकनाथ श्रीपती फुटाणे	19-23
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार – एक अभ्यास प्रा. डॉ. सुरेश वसंतराव खोंड	24-26
9	डॉ. भिमराव अंबेडकर के शिक्षा संबंधी विचार और कार्य प्रा. डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव	27-29
10	माडिया आदिवासींच्या समस्या सोडविणारी एकमेव संस्था – लोकबिरादरी प्रकल्प प्रा.संजय उत्तमराव ठगेमुगे	30-33
11	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार डॉ. चेतना दत्तात्रय जगताप	34-36
12	डॉ.राममनोहर लोहिया यांचे समाजवादाविषयीचे विचार प्रा. डॉ.सिद्राम सलवदे	37-40
13	महात्मा फुले वाङ्मय व कार्य विजयकुमार रामदास घोडके	41-44
14	उच्च शैक्षणिक ग्रंथालयासमोरील आव्हाने प्रा. सरडे दिलीप निवृत्ती	45-47
15	सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता महात्मा ज्योतिराव फुले प्रो. डॉ. गायकवाड मुकुन्द	48-49
16	म. फुले यांनी शेतकऱ्यांच्या, कष्टकऱ्यांच्या दुःखस्थिती विषयी मांडलेले विचार व त्याचा मराठी साहित्यावर झालेला परिणाम प्रा. डॉ. चंदनशिव राजेश नारायण	50-52
17	अर्थतज्ञ: डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर डॉ. भागवत सुभाष गजघाने	53-55

Scanned with CamScanner

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Refereed and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, December 2021, Volume-12, Issue-26
Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and Dr. B. R. Ambedkar - Thoughts and works

राजर्षि शाहू महाराज और आर्य समाज

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,उस्मानाबाद एवं शोध-निर्देशक एवं निमंत्रित सदस्य,हिंदी अध्ययन मंडळ,डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद

vvvinvay3@gmail.com

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:|
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च|
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिहभुयाममयं मे काम: समृध्यतामुप मादो नमतु||[1]

अर्थात् वेदों के वक्ता ईश्वर कहते हैं कि, "क्योंकि इस कल्याणकारिणी वेदवाणी को सभी जनों के लिए मैं उपदेश कर रहा हूँ| ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए भी, जन्म से शूद्र के लिए भी और वैश्य के लिए भी अपनों के लिए भी और परायों के लिए भी अरण्य में रहनेवालों के लिए भी, अत: इस संसार में विद्वानों का और वेदों का दान अन्यों को देनेवाले का प्यारा होऊँ| अब विद्यार्थी कहता है कि, यह मेरी इच्छा पूर्ण हो कि यह वेद ज्ञान मुझे समीपता से प्राप्त रहे|" आधुनिक भारत के इतिहास में प्रगतिशील प्रान्त के रूप में महाराष्ट्र की पहचान है| महाराष्ट्र के इतिहास में जो समाज सुधारक आन्दोलन हुए उनमेंमानव धर्म सभा (प्रवर्तक - दादोबा पांडुरंग तर्खडकर, स्थापना – १८४४), परमहंस सभा (प्रवर्तक - दादोबा पांडुरंग तर्खडकर, स्थापना – १८४८), प्रार्थना समाज (प्रवर्तक - दादोबा पांडुरंग तर्खडकर, स्थापना – १८६७), सत्यशोधक समाज (प्रवर्तक –महात्मा ज्योतिराव फुले, स्थापना – १८७३) आदि प्रमुख आन्दोलन हैं| किन्तु आर्य समाज (प्रवर्तक – महर्षि दयानंद सरस्वती – १८७५) आन्दोलन इन सभी आंदोलनों से भिन्न आन्दोलन है| राजर्षि शाहू महाराजा का मूल रूप से इसी सामाजिक आन्दोलन के प्रशंसक और समर्थक रहे हैं| सच तो यह है कि महात्मा ज्योतिराव फुले जी, राजर्षि शाहू महाराज जी और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी इन तीनों समाजसुधारकों पर 'आर्य समाज' का बहुत बड़ा प्रभाव था| बड़ोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहे|

आर्य समाज का सर्वप्रथम परिचय राजर्षि शाहू महाराज को उनसे राज्याभिषेक से बहुत ही पूर्व अर्थात् इ. स. १८८२ में ही हुआ था| इस समय उनकी अवस्था मात्र ८ वर्ष की थी| इस समय वे उत्तर भारत का शैक्षिक दौरा कर रहे थे| मथुरा स्थित आर्य समाज ने उनका सत्कार सम्मानपत्र देकर किया गया था| इस प्रवास में राजर्षि शाहू महाराज ने उत्तर भारत विशेष कर उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान आदि के आर्य समाजों द्वारा संस्थापित अनौपचारिक विद्यालयों का निरिक्षण किया था| इनमें सभी जाति-सम्प्रदायों के छात्रों को बिना किसी भेद-भाव के वेद-उपनिषद्-शास्त्रों की नि:शुल्क दी जानेवाली शिक्षा का जाने-अनजाने प्रभाव बालक शाहू पर अवश्य पड़ा|

इस घटना के १२ वर्ष बाद राजर्षि छत्रपति शाहू महाराज का राज्याभिषेक हुआ| इ. स. १८९४ में उनका करवीर अथवा कोल्हापुर के मराठा रियासत के महाराज के रूप में राज्यारोहण हुआ|मात्र २० वर्ष की अवस्था में उन्होंने बहुत बड़ी जिम्मेदारी का सम्यक वहन किया| स्थानिक समस्याओं के समाधान के लिए बहुत सा समय दिया|

राज्यारोहण के ८ वर्ष बाद इ. स. १९०२ में इंगलैंड की जलपोत यात्रा में राजर्षि शाहू महाराज का परिचय इदार रियासत के महाराजा प्रतापसिंह राठोड जी से हुआ| महाराजा प्रतापसिंह जी ने आर्य समाज का पूरी तरह से स्वीकार किया था| बचपन में शैक्षिक यात्रा के दौरान आर्य समाज के शैक्षिक आर्यों से शाहू महाराज परिचित हो चुके थे| इस बीच १८८५ में महर्षि दयानंद के शिष्य लाला हंसराज जी ने लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज और इ. स. १९०२ में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी| शिक्षाप्रेमी शाहू महाराज जी ने इदार के महाराजा प्रतापसिंह जी से आर्य समाज के शैक्षिक और सामाजिक कार्यों से सम्पूर्ण परिचय प्राप्त किया| राजर्षि शाहू महाराज आर्य समाज के कार्यों से बहुत प्रभावित हुए|

ब्राह्मण पुरोहितों के स्थान पर मराठा पुरोहित, क्षत्रियों के स्वतंत्र शंकराचार्य और सत्यशोधक समाज के स्थान पर आर्य समाज का अनुगमन यह राजर्षि शाहू महाराज जी की अपनी नीजि विशेषता है| ब्राह्मण समाज की पोंगाशाही को चुनौती देने के लिए और हिन्दू धर्म में व्याप्त ब्राह्मणों का वर्चस्व समाप्त करने के लिए राजर्षि शाहू महाराज जी ने जिन उपक्रमों की योजना की थी, उनमें मराठा समाज के लिए अलग से मराठा शंकाराचार्य भी

Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण योजना थी| 'वेदोक्त प्रकरण' के विवाद के समय ही अर्थात् मार्च १९०५ में राजर्षि शाहू महाराज जी ने अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था कि, "हमें अपनी जाति के ही पुरोहित नियुक्त कर ब्राह्मण जाति का जंजाल फेंक देना चाहिए और जैन तथा सुनार समाज की तरह ही अपना भी उद्धार कर लेना चाहिए|"[३] किन्तु इस धार्मिक स्वाधीनता की योजना का विरोध ब्राह्मण नौकरशाही की साथ-साथ सत्यशोधक समाज के सदस्यों ने भी किया| राजर्षि शाहू महाराज जी ने सत्यशोधक समाज की सहायता तो ली पर धर्म की अनिवार्यता के बारे में वे कुछ अधिक सहायता नहीं कर पाए| ऐसे में आर्य समाज ही एक मात्र मार्ग रहा गया था जिसका स्वीकार राजर्षि शाहू महाराज जी ने किया|

आर्य समाज के प्रमुख सिद्धांतों में वेदों को प्रमाण मानना, वेदों के अनुकूल ग्रंथों का स्वीकार करना, वेदों के प्रतिकूल ग्रंथों का अस्वीकार करना, सभी वर्णों और जातियों के लिए वेदों के अध्ययन और उपनयन का अधिकार, स्त्रियों के लिए वेदाध्ययन और उपनयन का अधिकार, प्राचीन गुरुकुल एवं कन्या गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार, काल्पनिक स्वर्ग-नरक की अवधारणा का अस्वीकार, मूर्तिपूजा और अवतारवाद का अस्वीकार, प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में हुए प्रक्षेप का अस्वीकार, जन्मना जातिप्रथा स्थान पर कर्मणा वर्णाश्रम व्यवस्था का स्वीकार, बाल विवाह निषेध, अंतरजातीय विवाह समर्थनआदि हैं|

राजर्षि शाहू महाराज जी को उक्त सारे सिद्धांत अच्छे और समाज के लिए कल्याणकारी लगे और उन्होंने इन सिद्धान्तों का स्वीकार किया| किन्तु इस बारे में उन्हें सबसे अधिक विरोध 'ब्राह्मण ब्युरोक्रोसी' से हुआ| राजर्षि शाहू महाराज अपने मित्र वूडहाउस को पत्र में लिखते हैं – "सत्यशोधक समाज की कोई नींव नहीं है, किन्तु आर्य समाज को वेदों का आधिष्ठान प्राप्त है| ब्राह्मणेतर जातियों को वेद पढ़ाने का अर्थात् जो ब्राम्हणों को अप्रिय है, ऐसा उनका धर्म सीखाने का मेरा विचार है.....सर प्रतापसिंह की तरह ही मेरी भी वेदों पर श्रद्धा है और मैं आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रशंसक हूँ|"[४]

राजर्षि शाहू महाराज जी के आश्रय में जनवरी १९१८ में कोल्हापुर में आर्य समाज की स्थापना हुई| इस कार्य में उन्हें पं. आत्माराम जी की सहायता हुई| इससे पूर्व ही आगरा से पधारे स्वामी परमानंद जी के मार्गदर्शन में कोल्हापुर में आर्य समाज का कार्य आरम्भ हो चुका था| १९१८ में ही स्वामी परमानन्द जी ने कोल्हापुर के निकट स्थित केरले नामक गाँव में प्राथमिक विद्यालय और गुरुकुल की स्थापना की थी| इस गुरुकुल में पढ़नेवाले ३० ब्रह्मचारियों के भोजन के व्यय के लिए ५ हज़ार रुपये प्रदान करना स्वयं राजर्षि शाहू महाराज जी ने एक आदेश में स्वीकार किया था| इस आदेश में यह अपेक्षा की गयी थी कि "ब्रह्मचारियों का भोजन और वस्त्र सीधे-सादे होनी चाहिए और शिक्षा का लक्ष्य उच्च होना चाहिए, जिससे इस गुरुकुल के ब्रह्मचारी उत्तम नागरिक सिद्ध होंगे|"[५]

इसके उपरांत राजर्षि शाहू महाराज जी के ही आदेश से आर्य समाज ने मई १९१८ में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की तर्ज पर 'फर्स्ट ग्रेड एंग्लो वैदिक स्कूल' की स्थापना की गई| इससे जुड़कर ही एक और गुरुकुल की भी स्थापना की गयी| इस स्कूल और गुरुकुल के लिए भूमि और ईमारत भी प्रदान की गयी| गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के लिए साडी सुविधाएँ मुफ्त थीं| इनका सारा कार्य संयुक्त प्रान्त की 'आर्य प्रतिनिधि सभा' की ओर सौंपा गया था| इतना ही नहीं तो बाद में 'राजाराम कॉलेज' और 'राजाराम स्कूल' का प्रबंधन भी 'आर्य प्रतिनिधि सभा' को ही सौंपा गया| आर्य समाज के स्कूल और गुरुकुलों में तथाकथित अस्पृश्यों और अन्य सभी जातियों के बालकों को प्रवेश दिया जाता था| अस्पृश्य जातियों के बालक अन्य बालकों के साथ वेदों की शिक्षा ग्रहण करते थे| राजर्षि शाहू महाराज ने अपनी रियासत में पटवारियों की परीक्षा में महर्षि दयानंद सरस्वती लिखित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन अनिवार्य कर दिया था| उनके द्वारा स्थापित छात्रावासों के ब्रह्मचारियों के लिए भी 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन अनिवार्य कर दिया था|

आर्य समाज का स्वीकार करने के कारण के रूप राजर्षि शाहू महाराज जी ने अपने एक मित्र को १९१८ में लिखे एक पत्र में स्पष्ट स्वीकार किया है कि – "उस हेतु के लिए मैं इस समय सत्य शोधक समाज और आर्य समाज की सहायता ले रहा हूँ| मैं स्वयं अंतःकरण से आर्य समाजी हूँ और यह कभी प्रकट रीति से न बोलने पर भी आर्य समाज के सिद्धांतों का गौरव करता हूँ| ब्राह्मणों ने मेरे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया| विशेषकर खामगाव में आयोजित मराठा शिक्षण परिषद में मेरे व्याख्यान के उपरांत उन्होंने मेरे साथ जो व्यवहार किया, वह व्यवहार ही मेरे आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रकट गौरव और स्वीकार के लिए तत्कालीन कारण सिद्ध हुआ है| आर्य समाज वेदों से चिपककर रहता है और ब्राह्मणों द्वारा रचे गए पुराणों को नहीं मानता|"[६]

दुर्भाग्य से राजर्षि शाहू महाराज जी की मृत्यु ६ मई १९२२ को हो जाने के कारण उनके प्रयासों को एक प्रकार से धक्का लगा| साथ ही आर्य समाजी विद्वानों की हिंदी बातचीत को मराठी लोग ठीक ढंग से समझने के कारण कोल्हापुर और महाराष्ट्र में पुनः सत्यशोधक समाज की प्रतिष्ठा हुई|

Scanned with CamScanner

सन्दर्भ सूची

1. यजुर्वेद अध्याय २६ मन्त्र २
2. छत्रपती शाहू महाराज : एक अभ्यास – प्रा. शेषराव मोरे
3. (द्रष्टव्य राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – सं. डॉ. शिवाजीराव शिंदे, पृ. क्र.१७)
4. राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – डॉ. जयसिंगराव पवार
5. (द्रष्टव्य राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – सं. डॉ. शिवाजीराव शिंदे, पृ. क्र.१४)
6. राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – डॉ. जयसिंगराव पवार
7. (द्रष्टव्य राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – सं. डॉ. शिवाजीराव शिंदे, पृ. क्र.१५)
8. छत्रपती शाहू महाराज : एक अभ्यास – प्रा. शेषराव मोरे
9. (द्रष्टव्य राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – सं. डॉ. शिवाजीराव शिंदे, पृ. क्र.१९)

संदर्भ ग्रन्थ :-

१. आर्यधर्म विश्वव्यापी धर्म बनेल । - राजर्षी शाहू महाराज
(८ मार्च १९२०, सौराष्ट्र के भावनगर में आयोजित अखिल भारतीय आर्यधर्म परिषद के समापन सत्र के प्रमुख अतिथि के रूप में व्याख्यान)
२. मी आर्य समाज मताचा कसा झालो - राजर्षी शाहू महाराज
(२४ नवम्बर १९१८, मुम्बई के परेल में आयोजित सभा में व्याख्यान)
३. हा विद्येचा समय आहे - राजर्षी शाहू महाराज
(१९ अप्रैल १९१९, उत्तर प्रदेश के कानपुर में अखिल भारतीय कुर्मी क्षत्रियों की १३ वीं सामाजिक परिषद के अध्यक्ष पद से व्याख्यान)
४. धनगर मराठा विवाह योजना – मामासाहेब महागावकर
५. अंतर्जातीय व आन्तर्धर्मीय विवाहास व नोंदणी पद्धतीस मान्यता देणारा कायदा (१२ जुलाई १९१९)
६. राजाराम कॉलेज व राजाराम हायस्कूल आर्य प्रतिनिधी सभा यांना देण्याचा वटहुकूम (१९१९)
६. तलाठ्यांना प्रशिक्षणात 'सत्यार्थ प्रकाश' अनिवार्यकरणाचा व अस्पृश्यांना प्राधान्य देणारा वटहुकूम (२२ अगस्त१९१९)
७. कोल्हापूर राज्यात गोवध बंदी करणारा शाहू महाराजांचा हुकूम (१६ अगस्त१९१९)
८. राज्यातील तलाठ्यांना प्रशिक्षण व नेमणुका याविषयीचे नियम सांगणारा शाहू महाराजांचा जाहीरनामा (३० अगस्त १९१९)
९. तलाठ्यांच्या नेमणुकीसंबधीचा जाहीरनामा प्रत्येक तलाठ्याने 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तकाचा अभ्यास करून त्याची परीक्षा दिली पाहिजे म्हणून शाहू महाराजांचा हुकूम (१० अगस्त१९१८)
१०. राजर्षी शाहू महाराज आणि विरोधकांच्या काकगर्जना – डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
११. मर्च लाईट विझला – प्रबोधनकार केशव सीताराम ठाकरे
१२. राजर्षी शाहू : एक चिंतन – प्रा. नरहर कुरुंदकर
१३. राजर्षी शाहू स्मारक ग्रंथ – सं. डॉ. जयसिंहराव पवार
१४. राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – डॉ. जयसिंगराव पवार
१५. छत्रपती शाहू महाराज : एक अभ्यास – प्रा. शेषराव मोरे
१६. राजर्षी शाहू महाराज आणि आर्य समाज – सं. डॉ. शिवाजीराव शिंदे

Scanned with CamScanner